

# श्री सीताराम कुटीर

श्यामकुटी परिक्रमा मार्ग, वृंदावन ॐ

## ॥ शिव पञ्चाक्षर स्तोत्रम् ॥

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय।  
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै न काराय नमः शिवाय॥1॥

हे महेश्वर। आप नागराज को हार स्वरूप धारण करने वाले हैं। हे (तीन नेत्रों वाले) त्रिलोचन आप भस्म से अलंकृत, नित्य (अनादि एवं अनन्त) एवं शुद्ध हैं। अम्बर को वस्त्र सामान धारण करने वाले दिगम्बर शिव, आपके न् अक्षर द्वारा जाने वाले स्वरूप को नमस्कार।

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथ महेश्वराय।  
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै म काराय नमः शिवाय॥2॥

चन्दन से अलंकृत, एवं गंगा की धारा द्वारा शोभायमान नन्दीश्वर एवं प्रमथनाथ के स्वामी महेश्वर आप सदा मन्दार पर्वत एवं बहुदा अन्य स्रोतों से प्राप्त पुष्पों द्वारा पुजित हैं। हे म् स्वरूप धारी शिव, आपको नमन है।

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।  
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै शि काराय नमः शिवाय॥3॥

हे धर्म ध्वज धारी, नीलकण्ठ, शि अक्षर द्वारा जाने जाने वाले महाप्रभु, आपने ही दक्ष के दम्भ यज्ञ का विनाश किया था। माँ गौरी के कमल मुख को सूर्य सामान तेज प्रदान करने वाले शिव, आपको नमस्कार है।

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्यमुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।  
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै व काराय नमः शिवाय॥4॥

देवगणों एवं वसिष्ठ, अगस्त्य, गौतम आदि मुनियों द्वारा पुजित देवाधिदेव। सूर्य, चन्द्रमा एवं अग्नि आपके तीन नेत्र सामन हैं। हे शिव आपके व् अक्षर द्वारा विदित स्वरूप को नमस्कार है।

यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।  
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै य काराय नमः शिवाय॥5॥

हे यक्ष स्वरूप, जटाधारी शिव आप आदि, मध्य एवं अन्त रहित सनातन हैं। जिनके हाथ में पिनाक है, जो दिव्य सनातन पुरुष हैं, हे दिव्य अम्बर धारी शिव आपके य अक्षर द्वारा जाने जाने वाले स्वरूप को नमस्कार है।

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।  
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥6॥

जो कोई शिव के इस पञ्चाक्षर मंत्र का नित्य ध्यान करता है वह शिव के पुण्य लोक को प्राप्त करता है तथा शिव के साथ सुख पूर्वक निवास करता है।